जैन साहित्य

**डॉ. कृष्ण कुमार पासवान**

**सहायक प्राध्यापक**

**हिंदी विभाग**

**राम चरित्र सिंह महाविद्यालय**

**मंझौल, बेगुसराय**

**सम्पर्क :** [**ksoni.hindi@gmail.com**](mailto:ksoni.hindi@gmail.com)

**जैन शब्द ‘जिन’ से बना है जिसका अर्थ है ‘विजय पाने वाला’ और यह विजय सांसारिक आकर्षणों पर है। जैन मुनियों ने दया, करुणा, अहिंसा, त्याग को अधिक महत्व दिया।**

**जैन साहित्य के प्रमुख कवियों में स्वयंभू, पुष्पदन्त, रामसिंह व धनपाल के नाम आते हैं। ‘पउम चरिउ’, ‘रिट्ठनेमि चरिउ’ आदि काव्यों की रचना की। ‘पउम चरिउ’ राम चरित्र पर आधारित जैन रामायण है। इस रचना के कारण स्वंयभू को ‘अपभ्रंश का वाल्मीकि’ भी कहा गया है। इनमें जैन सिद्धान्तों की श्रेष्टता को स्थापित करने के लिए राम को उनके प्रति झुकते दिखाया गया है। पुष्पदंत ने ‘णयकुमार चरिउ’ तथा रामसिंह ने ‘पाहुड़ दोहा’ की रचना की है।**

**जैन मुनियों का मूल उद्देश्य अपने संप्रदाय की शिक्षाओं का प्रसार करना था। इसलिए इनके काव्यों की प्रवृत्ति उपदेशात्मक है। इनकी रचानाएं उपदेशमूलक होने के कारण मुख्य रूप से मुक्तक है जैसे ‘पाहुड़ दोहा’ किंतु इनके द्वारा रचित काव्यों का रूप प्रबंधात्मक है जैसे ‘पउम चरिउ’, णयकुमार चरिउ’ आदि।**

**जैन मुनियों को राजाओं व धनी व्यापारियों का संरक्षण प्राप्त था अत: इनके द्वारा प्रयुक्त अपभ्रंश में भी शिष्टता व परिनिष्ठिता अभिलक्षित होती है।**

**हेमचंद्र (लगभग 1038 – 1097) :- हेमचंद्र जैन मुनि थे और अपनी विद्या व पाण्डित्य के कारण अत्यंत विख्यात थे। गुजरात के राजा सिद्धराज जयसिंह व उसके भतीजे कुमारपाल द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया।**

**इन्होंने जैन मुनियों के नैतिक उपदेशें का प्रसार करने के लिए साहित्य की रचना की। किंतु साथ ही जैन सिद्धान्तों के अपवाद के रूप में इन्होंने वीर प्रधान उक्ति का उदाहरण दिया जो निम्न लिखित है-**

**‘खग्ग विसाहिउ जहि लहहुं, पिय ताहि देसहिं जाहुं।**

**रण दुहिभक्खे भग्गोंइ, विणु जुज्झे न बलाहंु।।’**

**(नायिका प्रिय से कहती है कि मुझे उस देश में ले चलो जहां तलवारों का व्यापार होता है। यहां तो युद्धों का अकाल पड़ गया है, बिना युद्ध के हम कमजोर हो जाएंगे।)**

**इन्होंने व्याकरण के नियमों को भी अपनी कविताओं में स्पष्ट किया। ‘सिद्ध हेमचंद शब्दानुशासन’ जो कि ‘प्राकृत-अपभ्रंश का व्याकरण है, इस रचना के कारण इन्हें ‘प्राकृत का पाणिनि’ भी कहते है। इनकी अन्य रचनाओं में ‘देशी नाममाला’ व ‘कुमार पाल चरित’ उल्लेखनीय है।**

**इन्होंने ‘दोहा’ छंद का प्राय: प्रयोग किया है। इनके द्वारा प्रयुक्त प्राकृत में प्राकृत की स्वाभाविक सुगंध प्रकट होती है। उसमें राजसी वैभाव के स्थान पर जनमानस की स्वाभविक भावाभिव्यक्ति हुर्इ है।**

**(समाप्त)**